साहित्योत्सव 2016
festival of letters
15-20 February 2016

दैनिक समाचार बुलेटिन

शनिवार, 20 फ़रवरी 2016

परिसंवाद : भारत की अलिखित भाषाएँ

साहित्योत्सव के पाँचवें दिन आज भारत की अलिखित भाषाओं पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात भाषाविद् देवी प्रसन्न पटनायक ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। महेंद्र कुमार मिश्र ने उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त देश की अलिखित भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों की अलिखित भाषाओं/मौखिक परंपरा के साहित्य को लिपिबद्ध कर प्रकाशित

करने के प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अलिखित भाषाओं और साहित्य पर केंद्रित इस आयोजन में 'अलिखित भाषाओं के लिपीकरण की चुनौतियाँ' और 'अलिखित साहित्य/मौखिक परंपरा' विषय पर प्रख्यात विद्वान अपने विचार व्यक्त करेंगे।

उद्घाटन वक्तव्य में देवी प्रसन्न पटनायक ने लुप्त होती भाषाओं के संकट पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भाषाओं के जीवन पर संकट जिन देशों में सबसे अधिक है, उनमें भारत पूरे विश्व में शीर्ष स्थान पर है। उन्होंने बताया कि अंतरराष्ट्रीय मैप में दी गई सूची में 196 संकटग्रस्त भाषाएँ भारत की हैं, जिन्हें पाँच चरणों में बाँटा गया है। उन्होंने कहा कि विश्व में भारत सर्वाधिक भाषिक विविधता की जनसंख्या वाले देशों में एक है। इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी और बढ़

आज के कार्यक्रम

संगोष्ठी : 'अनुवाद चेतना और भारत में भारतीय साहित्यिक परंपराएँ', पूर्वाह्न 10.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ, पूर्वाह्न 10.30 बजे, रवींद्र भवन लॉन

सांस्कृतिक कार्यक्रम : 'चेराव' (बाँस नृत्य) की प्रस्तुति, पूर्वाह्न 11.00 बजे, रवींद्र भवन लॉन

राष्ट्रीय संगोष्ठी : 'गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव', पूर्वाह्न 10.00 बजे, साहित्य अकादेमी सभागार

जाती है। उन्होंने शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित करते हुए कहा कि शिक्षा, ज्ञान से समृद्ध संसार में दाख़िल होने का पासपोर्ट है। उन्होंने बताया कि नई टेक्नोलॉजी ने अभिव्यक्ति के नए आयाम तो खोले ही हैं, साथ ही एक अवसर भी दिया है कि हम अलिखित को विभिन्न तरीक़ों से दर्ज कर संरक्षित कर सकें।

प्रख्यात विद्वान और लोकसाहित्यविद् महेंद्र कुमार मिश्र ने बीज वक्तव्य में अपने कार्यकारी अनुभवों के हवाले से कई महत्त्वपूर्ण उदाहरण देते हुए लोक और शास्त्र को परिभाषित किया। उन्होंने कहा कि शास्त्र और लोक में कई साम्य हैं। कालिदास के एक श्लोक में जो कथ्य है, संभव है कि किसी लोकगीत या लोककथा में भी वही कथ्य मिल जाए। उन्होंने लोकाचारों की व्याख्या करते हुए कहा कि संस्कृति के चार स्तर के लोकाचार प्राचीनकाल से भारतीय लोक जीवन में प्रचलित और प्रतिष्ठित रहे हैं। उन्होंने कहा कि निश्चित तौर पर शिक्षित मनुष्य देश का मस्तिष्क हैं लेकिन लोक देश की आत्मा है। ओरल सोसाइटी की विशेषता बताते हुए उन्होंने रेखांकित किया कि ओरल सोसाइटी के लिए समय गौण है, घटनाएँ और परिस्थितियाँ उसके समय को प्रस्तुत करती हैं। उन्होंने अलिखित भाषाओं के जीवन पर मँड़राते ख़तरे को अत्यंत गंभीर बताते हुए कहा कि हमें इस ओर बहुत संवेदना के साथ विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि यह हमारी आदिमता का साक्ष्य है, जिसे संरक्षित करना हमारी निजी और सामूहिक दोनों ही तरह की ज़िम्मेदारी है।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि भारत का लोक साहित्य और लोक भाषाएँ अत्यंत समृद्ध हैं। साहित्य अकादेमी के मुख्य एजेंडे में भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन है और अकादेमी इसके लिए विशेष रूप से सजग है।

'अलिखित भाषाओं के लिपीकरण की चुनौतियाँ' विषयक सत्र की अध्यक्षता अवधेश कुमार मिश्र ने की। बी. रामकृष्ण रेड्डी, प्रमोद पांडेय और गणेश मुर्मू ने आलेख पाठ किए। अलिखित 'साहित्य/मौखिक परंपरा' विषयक सत्र में लोक साहित्य पर चर्चा हुई। भगवान दास पटेल ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जनजातीय समाज में सामूहिकता और समानता है। स्त्रियों की स्वतंत्रता और समानता हमें आदिवासी साहित्य से सीखना चाहिए। इंद्रनील आचार्य ने कहा कि भाषा और साहित्य एक दूसरे पर अन्योन्याश्रित हैं। वसंत निर्गुणे ने कहा कि जनजाति के लोग एक समय में कभी नहीं जीते। वे तीनों समय में जीते हैं। इसलिए उन्हें अपनी उम्र तक का बोध नहीं होता। उन्हें किसी जन्म तिथि की ज़रूरत नहीं होती। वे किसी सामूहिक संहार के पक्ष में कभी नहीं रहे।

सत्र के अंत में श्रोताओं ने महत्त्वपूर्ण सवाल पूछे और विशेषज्ञों ने समुचित जवाब दिए। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी
दूसरा दिन

गाँधी, अम्बेडकर, नेहरू : निरंतरता और अलगाव

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन चार सत्र आयोजित किए गए। 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' विषयक सत्र की अध्यक्षता एस.एल. भैरप्पा ने की। इस सत्र में सुधीश पचौरी और मकरंद परांजपे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुधीश पचौरी ने कहा कि संविधान में प्रदत्त बुनियादी अधिकारों में से आज़ादी भी एक है, लेकिन वह दूसरे के लिए परेशानी की बायस न बने, यह भी ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि गाँधी की सहनशीलता न संविधानगत है न क़ानूनगत बल्कि अहिंसा ग्रस्त निजी नैतिकता से जुड़ी है। यह शायद महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह और अपने जीवन के उदाहरणों से उनको मिली है, यहाँ सहिष्णुता एक निजी उद्यम है। उन्होंने कहा कि आपातकाल तानाशाही का पहला मुक़म्मल राजनीतिक कंस्ट्रक्ट था। उससे लड़ना भी उतना ही बड़ा राजनीतिक कंस्ट्रक्ट था। मकरंद परांजपे ने अपने वक्तव्य में कुछ ताज़ा हालात का ज़िक्र करते हुए कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मनुष्य के नागरिक अधिकारों में बहुत महत्त्वपूर्ण है और इस अधिकार के प्रति नकार अथवा अवहेलना का भाव निराशाजनक स्थिति पैदा करती है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में एस. एल. भैरप्पा ने कहा कि विरोध करने के लिए विरोध एक एकांगी सुनियोजित चाल है। इससे एक समूह की अभिव्यक्ति का सवाल स्वयं प्रश्नांकित हो जाता है।

'स्त्री और समानता' विषयक सत्र की अध्यक्षता रुक्मिणी भाया नायर ने की। इस सत्र में अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए एस. फाउस्टिना 'बामा' ने कहा कि महात्मा गाँधी, बाबासाहेब अम्बेडकर और जवाहर लाल नेहरू के बिना हम भारतीय संविधान की भूमिका को प्रचारित नहीं कर सकेंगे। ये तीनों ही विभूतियाँ हमारी राह के प्रकाश स्तंभ हैं। उन्होंने कहा कि हम किसी नए सामाजिक अधिकार के बारे में प्रश्न नहीं कर रहे, हम केवल चाहते हैं कि हमसे समान व्यवहार किया जाए।

उर्मिला पवार ने अपने वक्तव्य में स्त्री के अधिकारों और बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए महात्मा गाँधी, डॉ. अम्बेडकर और जवाहर लाल नेहरू के विभिन्न कार्यों का ज़िक्र किया।

रक्षंदा जलील ने वर्तमान समय और समाज में महिलाओं की वास्तविक जीवन-स्थिति की पड़ताल करते हुए कहा कि स्त्रियाँ जागरूक हुई हैं, यह बहुत सकारात्मक और आशा से भरी स्थिति है।

'जाति और समानता' विषयक सत्र की अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन ने की। राजकिशोर, के. इनोक और रामदास भटकल ने अपने विचार व्यक्त किए। राजकिशोर ने कहा कि जाति और

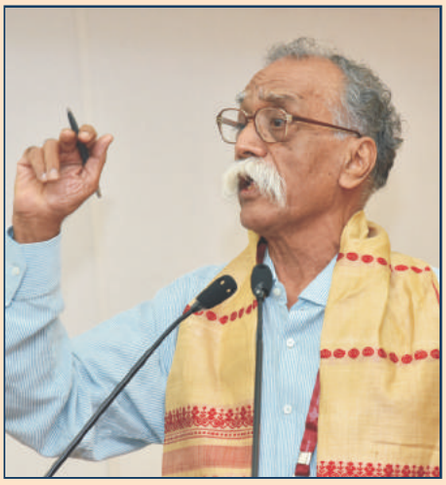

समानता के रिश्ते को एकतरफ़ा निगाह से नहीं देखना चाहिए। प्रश्न यह है कि जाति समानता के रास्ते में बाधा पैदा करती है या समानता के अभाव में जाति पैदा हुई है। उन्होंने कहा कि जाति के ख़ात्मे का आर्थिक अविकास से गहरा संबंध है। असमान विकास जाति की जड़ों को मज़बूत करता है, क्योंकि वह नए-नए सामाजिक सोपान पैदा करता है। के. इनोक ने कहा कि जाति, जनजाति और वर्गों के आधार पर जब सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भेदभाव और असमानताओं का ख़ात्मा होगा और शैक्षणिक अवसर उपलब्ध किए जाएँगे तो मौजूदा स्थिति बदलेगी। रामदास भटकल ने गाँधी और अम्बेडकर के विभिन्न विचारों के आधार पर विवेचन किया और कहा कि डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि बुद्ध और कार्ल मार्क्स का उद्देश्य समान था। उन्होंने निजी संपत्ति के विषय में दोनों की स्थापनाओं का उदाहरण दिया।

'भाषा का प्रश्न' विषयक सत्र की अध्यक्षता भालचंद्र नेमाड़े ने की। उन्होंने कहा कि भाषा, मनुष्य की जैविक, भौगोलिक और सांस्कृतिक ज़मीन की परिचायक होती है। उन्होंने 'स्वदेशी' संस्कृति के तत्त्वों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस सत्र में पृथ्वीदत्त चंद्रशोभी और सोयम लोकेंद्रजित सिंह ने विचारोत्तेजक आलेख प्रस्तुत किए। सत्रों का संचालन अकादेमी की उपसचिव गीतांजलि चटर्जी ने किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

कथकली शैली में *ओथेलो* की प्रस्तुति

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रतिदिन पूर्वाह्न 10.00 बजे से सायं 7.00 बजे तक, रवींद्र भवन लॉन

साहित्योत्सव के लाइव वेबकास्ट के लिए कृपया देखें
http://sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/festival/webcast_2016.jsp

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग (मंडी हाउस मेट्रो स्टेशन के पास), नई दिल्ली-110 001
फोन : +91-011-23386626 / 27 / 28
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in
वेब-साइट : www.sahitya-akademi.gov.in